भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 4164
उत्तर देने की तारीख 27.03.2023

सांस्कृतिक संस्थानों का आधुनिकीकरण एवं नवीकरण

4164. श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले :
श्री जी. सेल्वम :
डॉ. डी.एन.वी.सेंथिलकुमार एस. :
श्री कुलदीप राय शर्मा :
डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे :
डॉ. सुभाष रामराव भामरे :
श्री सुनील दत्तात्रेय तटकरे :
श्रीमती मंजुलता मंडल :
श्री सी.एन. अन्नादुरई :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश के विभिन्न राज्यों में कुल कितने सांस्कृतिक संस्थान और उच्चतर प्रशिक्षण संस्थान कार्य कर रहे हैं और प्रत्येक संस्थान द्वारा अब तक राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार क्या उपलब्धि हासिल की गई है;
(ख) प्रत्येक संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों/गतिविधियों का राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है और विगत तीन वर्षों के दौरान प्रत्येक संस्थान के लिए निर्धारित और जारी किए गए कुल बजट का ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या उक्त संस्थानों द्वारा प्रदान किए जा रहे अभिनव और अनुसंधान संबंधी प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कोई कार्य योजना है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है;
(घ) क्या सरकार ने भारतीय और विदेशी शोध छात्रों को देश के सांस्कृतिक संस्थानों में परियोजना अथवा अनुसंधान संबंधी परियोजना पर कार्य करने की अनुमति देने का निर्णय लिया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(ङ) क्या सरकार का विचार महाराष्ट्र राज्य में सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना करने का है और यदि हां, तो तत्संबंधी राज्य-वार ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति, पर्यटन एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री

(जी. किशन रेड्डी)

क): देश के विभिन्न राज्यों में निम्नलिखित 3 सांस्कृतिक संस्थान और उच्चतर प्रशिक्षण संस्थान कार्य कर रहे हैं:

i. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान (पं. डीयूआईए), नोएडा, उत्तर प्रदेश
ii. राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (एनआरएलसी), लखनऊ, उत्तर प्रदेश
iii. राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान: कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान (एनएमआई), नोएडा

उपर्युक्त संस्थानों द्वारा हासिल की गई उपलब्धियां इस प्रकार हैं:

i. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान (पं. डीयूआईए) ने छात्रों की सीटों की संख्या 15 से बढ़ाकर 25 कर दी है। पं. डीयूआईए द्वारा बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) देशों के लिए पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है।

ii. राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (एनआरएलसी), लखनऊ, उत्तर प्रदेश ने मूर्त सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण की कई पद्धतियां विकसित की हैं जैसे कि तांबे/कांस्य की वस्तुओं से चूने के जमाव को हटाने के लिए सुरक्षित विधि, सीसा धातु को संरक्षा प्रदान करने वाले संक्षारक रोधी यौगिक का संश्लेषण, कांस्य संक्षारण के नियंत्रण के लिए विधि, कांस्य वस्तुओं के संरक्षण के लिए विधि और इसने देश की सांस्कृतिक सम्पदा की लगातार हो रही विकृति को कम करने के लिए कई अध्ययन किए हैं। इस प्रयोगशाला द्वारा पुरावशेषों/भित्ति चित्रों आदि सहित अनेक कला/संग्रहालय वस्तुओं का भी संरक्षण किया गया है। उपरोक्त के अलावा, कई छात्रों/प्रतिभागियों को भी इस प्रयोगशाला द्वारा सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण में अपने अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है।

iii. राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान: कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान (एनएमआई), नोएडा की स्थापना वर्ष 1989 में मानित विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी और यह संस्कृति मंत्रालय के तहत स्वायत्त निकाय है। संस्थान ने विगत कुछ दशकों के दौरान कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान के अध्यापन और अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

(ख): प्रत्येक संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों एवं बजट का विवरण निम्नानुसार है:-

i. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान, पुरातत्व विज्ञान में 2 वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा, संग्रहालय विज्ञान, संरक्षण, रिमोट सेंसिंग टेक्नोलॉजी, पुरावस्तुओं के रासायनिक संरक्षण और परिरक्षण में अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और आवधिक कार्यशालाएं संचालित करता है।

वर्ष	बजट (लाख रुपये में)
2019-20	477.83
2020-21	504.18
2021-22	695.56

ii. राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (एनआरएलसी) एक प्रमुख अनुसंधान संगठन है जिसके अधिदेश में काल-निर्धारण, पर्यावरणीय पुरातत्व, भौतिक और रासायनिक साधनों द्वारा तकनीकी अध्ययन, संरक्षण विधियां, संदर्भ प्रलेखन, अन्य प्रयोगशालाओं को सहायता, राज्य पुरातत्व विभाग के संग्रहालयों को सहायता, संरक्षण में प्रशिक्षण और अंतरराष्ट्रीय निकायों के साथ निकट संपर्क बनाना शामिल है।

वर्ष	बजट (लाख रुपये में)
2019-20	630.80
2020-21	910.99
2021-22	860.50

iii. राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान: कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्र में एम.ए. और पीएच.डी. स्तर पर नियमित पाठ्यक्रम प्रदान करता है। संस्थान नियमित आधार पर भारत और विदेश में कला इतिहास में दो अल्पकालिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम आयोजित करने के साथ-साथ संग्रहालयों और सांस्कृतिक संस्थानों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

वर्ष	बजट (लाख रुपये में)
2019-20	1305.54
2020-21	1151.00
2021-22	2057.00

(ग):

i. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान ने प्रशिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार किया है।

ii. राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला शोध विद्वानों के लिए संस्थान में अनुसंधान कार्य की सुविधा प्रदान करती है।

iii. राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान, संस्कृति और विरासत में नवीन और उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण और अनुसंधान की सुविधा प्रदान करता है।

(घ):

i. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान, विदेश मंत्रालय के माध्यम से नामांकित विदेशी छात्रों को दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) और बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) देशों के पुरातत्वविज्ञान पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा (पीजीडीए) पाठ्यक्रम, परियोजनाओं और शोध कार्य के लिए अनुमति देता है।

ii. भारतीय शोध विद्वानों को राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला में शोध कार्य करने की अनुमति है।

iii. राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थानः कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान ने जागरूकता बढ़ाने और विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के साथ सहयोग की सुविधा के उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेमिनार, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि आयोजित करने के लिए भारत और विदेशों के संस्थानों के साथ करार किया है। संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा भारतीय और विदेशी विद्वानों को शामिल करने वाली शोध परियोजनाएं नियमित रूप से की जाती हैं।

(ड़): जी, नहीं।

****